जिला प्रदर्शनी की लम्बी यात्रा की

बुलन्दशहर प्रदर्शनी का गौरव पूर्ण इतिहास

ब्रिटिश शासन काल में अंग्रेज प्रशासक अपने मनोरंजन के लिए घुड़दौड़, पोलो आदि का प्रबन्ध किया करते थे, जिसके लिए अच्छे घोड़ों की आवश्यकता होती थी। अतः हर वर्ष घोडों का बाजार लगता था। इसी सम्बन्ध में 1881 ई0 में तत्कालीन अंग्रेज कलेक्टर मिस्टर किलार्क नें, जो टोम साहब के नाम से जाने जाते थे, बुलन्दशहर में अच्छी नस्ल के घोडों के लिए प्रदर्शनी का आयोजन किया । घोडों की प्रदर्शनी के साथ एक छोटा सा बाजार भी लगना शुरू हो गया। इस प्रकार बुलन्दशहर जनपद में प्रदर्शनी की नींव पडी। सन 1881 से लेकर 1926 ई0 तक यह प्रदर्शनी 'इम्पीरियल होर्स शो" के नाम से, जानी जाती रही। तत्पश्चात इसका नाम जिला प्रदर्शनी एवं हार्स शो पड़ा। 1955 ई0 से इस प्रदर्शनी का नाम जिला कृषि औद्योगिक तथा सांस्कृतिक प्रदर्शनी हो गया।

प्रशासनिक कार्यो की व्यवस्तता तथा आवागमन के साधन विकसित न होने के कारण अंग्रेज अधिकारियों के दरबारियों, जमींदारों, नबाबों व रईसों ने यह सुझाव रखा कि क्यों न जिले में ही घुडदौड का भी आयोजन किया जाये। क्योंकि आये दिन दिल्ली मेरठ व बम्बई आदि जाना मुश्किल काम था। फिर क्या था देखते–2 घुडदौड का मैदान (रेसकोर्स) तथा घुडदौड देखने के लिए शानदार सीडियों वाला विशाल चबूतरा तैयार हो गया। उस समय सबसे शौकीन तथा शानदार जमीदार चौ0 शिकारपुर की बुलन्दशहर स्थित कोठी के सामने जहॉ वर्तमान जिलाधिकारी की कोठी स्थिति है, वहॅा पर यह चबूतरा बना हुआ था। वर्तमान आफिसर्स कालोनी रेसकोर्स कालोनी के नाम से भी जानी जाती थी। कुछ ही वर्षो में भारी भीड जमा होने लगी। दांव लगाने, तकदीर आजमाने और रौबजमाने के लिए दूर–दूर के घुडसवार, जमीदार, नबाब, रईस व अधिकारीगण आने लगे। वर्तमान प्रदर्शनी में अधिकारीगण, जमीदारों, नवाबों तथा रईसों के शानदार कैम्प वहॅा पर लगाने लगे तथा दूर–2 से दुकानें भी आने लगीं तथा घुडसवारी के अतिरिक्त तत्कालीन अंग्रेज प्रशासकों, नवाबों व रईसों को खुश करने के लिए नाचने गाने के प्रबन्ध, नौटंकी, सर्कस व खेल तमाशे वाले भी आने लगे। इस प्रकार प्रदर्शनी का आयोजन होने लगा। सम्पूर्ण प्रदेश के लिए यहां एक होर्स ब्रीडिंग सेन्टर की स्थापना की गयी जो कुछ वर्षो तक घोडों की नस्ल सुधारने का कार्य करता रहा।

अब इस मेले को सुव्यवस्थित रूप देने की बात भी चलने लगी, संविधान बना, कमैटी बनी, मेम्बर और मेले को बाकायदा राज्य सरकार की मान्यता भी मिली।

मेले का अदघाटन अंग्रज कलेक्टर साहब बहादुर का शानदार घोडों की बग्गी, उसके पीछे, नबावों, जमीदारों, रईसों, सेठों व अधिकारियों का लम्बा काफिला एक अच्छा खासा जलूस का रूप लेकर कलेक्टर साहब की कोठी से शुरू होता था। उस समय कलेक्टर महोदय की कोठी, जहां वर्तमान निर्वाचन कार्यालय के सामने यूनाईटेड कामर्शियल बैंक स्थित है थी। यह जलूस कलेक्टर हाऊस से शुरू होकर गाजे बाजे के साथ सारे शहर का चक्कर लगाता हुआ प्रदर्शनी मैदान में पहुंचता था। जलूस में भारी संख्या में शानदार घोडों की बग्गियां, हाथी ऊॅट तथा घुडसवारों की लम्बी कतारें होती थी। प्रदर्शनी मैदान में प्रमुख रईसों तथा अधिकारियों द्वारा तत्कालीन अंग्रेज कलेक्टरों का भव्य स्वागत होता था तथा चांदी की कैंची से लाल फीता काटकर प्रदर्शनी के उदघाटन की घोषणा की जाती थी। इस जुलूस की खसियत यह होती थी कि जनपद के प्रमुख रईस अपनी हैसियत तथा अंग्रेज अधिकारियों से अपने सम्बन्धों के आधार पर कलक्टर महोदय की बग्गी के पीछे–2 अपनी–अपनी सवारियों का नम्बर लगवाने में फख समझते थे। नवाब छतारी, नवाब पहासू, नवाब पिंडराबल, नवाब घर्मपुर, नवाब दानपुर, नवाब खेलिया, नवाब अनोना, चौधरी साहब शिकारपुर, राजा साहब शाहनपुर, रईस ऊॅचागॉव, रईस कुचेरर, राय बहादुर नरत्थीमल,

खुर्जा, राय बहादुर सेठ गंगासागर जटिया, खुर्जा, राय बहादुर सेठ मेवाराम, खुर्जा राय बहादुर सेठ जानकी प्रसाद, खुर्जा राय बहादुर श्री जतन स्वरूप भटनागर,

सिकन्द्राबाद, सेठ जमुनाप्रसाद जी, जेवर चौ0 रधुवीर सिंह रईस, जेवर, नवाब सैयद महबूब अली, औरंगाबाद, आगा महबूब अली साहब, खान बहादुर मौहम्मद साहब, बुलन्दशहर आदि की सवारियॅा देखने योग्य होती थी।

इन रईसों ने मध्य द्वार बनवायें। सबसे पहलू नबाब छतारी ने एक विशाल द्वार बनवाया तत्पश्चात नबाब पहासू ने वफादारे सरकार पहासू मुमताज द्वार का निर्माण कराया। यह दोनों द्वार अब से करीब 92 वर्ष पूर्ण बनवाये गये, जो आज भी प्रदर्शनी के सबसे सुन्दर द्वार माने जाते है। इसके पश्चात जिला बोर्ड के तत्कालीन अध्यक्ष श्री रियासती सिंह ने छतारी और पहासू द्वारों के बीच एक मध्य द्वार का निर्माण कराया जा सन 1954 में गिर गया। उसके स्थान पर प्रदर्शनी द्वार का निर्माण कराया गया जिसका तत्कालीन जिलाधिकारी श्री जे0बी0 टन्डन द्वारा 12 फरवरी सन 1955 ई0 को उदघाटन किया गया तथा इस द्वार का सम्पूर्ण व्यय जनपद भटटा ऐसासियेशन ने किया। इस प्रकार द्वारों की एक बाढ सी आ गयी। कुछ रईसों ने अपने नाम से और कुछ रईसों ने अंगेज शासकों तथा अन्य अधिकारियों के नामों से द्वार बनवायें और इस प्रकार करीब करीब हर वर्ष एक नया द्वार निर्मित होने लगा । तत्कालीन जिलाधिकारी केप्टेन भगवान सिंह के कार्यकाल में बना मध्य द्वार तथा अशोक मीनार भी देखने योग्य है। बैरन हॉल के सामनें स्थित अकबर जहीर द्वार जिसका निर्माण तत्कालीन जिलाधिकारी एस0एच0 जहीर, आई0सी0एस0 के कार्यालय में सैयद मौहम्मद अकबर अली खां नबाब पिन्डरावल ने सन 1928 ई0 में कराया, जो प्रदर्शनी के अति सुन्दर द्वारों में से एक हैं। राय साहब जगत नरायन बैरी द्वार जिसका निर्माण सन 1946 ई0 में हुआ, भी देखने योग्य है।

मिस्टर डी0एस0 बैरन आई0सी0एस0 तत्कालीन कलैक्टर के कार्यकाल में प्रदर्शनी मैदान में सबसे अधिक निर्माण कार्य हुए। सन 1934 ई0 में दो द्वार तथा 32 पक्की दुकानों का मुख्य बाजार में निर्माण हुआ तथा सन 1934 में मुख्य बाजार के पश्चिम में उत्तर दक्षिण में बने दोनों द्वार भी उन्हीं ने बनवाये उन्हीं के कार्यकाल में सन 1936 ई0 में बैरन हाल का निर्माण हुआ जिसका उदघाटन मेरठ मण्डल के तत्कालीन आयुक्त मिस्टर पी0डब्लू मार्क्स सी0आई0ई0,आई0सी0एस0 द्वारा 25.2.37 को सम्पन्न हुआ। मुख्य बाजार के बीच में स्थित सुन्दर गुम्बद का निर्माण भी सन 1936 ई0 में मिस्टर डी0एस0बैरन द्वारा कराया गया। गुम्बद के पूरब में मुख्य बाजार में स्थित दुकानों का तथा दो द्वारों का निर्माण जिनमें से एक कम्बल बाजार को जाता है तथा दूसरा द्वार जो उसके सामने स्थित है इनका निर्माण मिस्टर जे0एल0सी0 स्टव्ज, आई0सी0एस0, तत्कालीन कलेक्टर के कार्यकाल में सन 1941 में हुआ। मुख्य बाजार के दक्खिन में बनी पक्की दुकानें तथा इसी बाजार में पूरब पश्चिम बने द्वार जिनमें से एक द्वार मुस्लिम होटलों के बाजार को जाता है। तथा दूसरा उसके सामनें वाला द्वार हिन्दू होटलों के बाजार को जाता है। इनका निर्माण सन 1929 ई0 में तत्कालीन जिलाधिकारी कृष्णप्रसाद, आई0सी0एस0 के कार्यकाल में सम्पन्न हुआ। मुख्य बाजार में बैरन हाल की तरफ दोनों ओर बनी पक्की दुकानें तथा दोनों द्वार सैयद अली अमीर हसन खान बहादुर कलेक्टर महोदय के कार्यकाल में 1937 ई0 में निर्मित हुए।

सहकारी द्वार का निर्माण जिसमें प्रदर्शनी का कृषि मंडप बनाया जाता है उसका निर्माण प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी तथा सहकारी नेता श्री मंगनलाल जी द्वारा श्री जे0बी0 टंडन के कार्यकाल में हुआ। कृष्णा द्वार जिससे होकर प्रदर्शनी के मुख्य बाजार में पूराब की तरफ से जाते है, उसका निर्माण जनपद भटटा ऐसोसियेशन द्वारा सन 1954 ई0 में श्री जे0बी0 टन्डन के कार्यकाल में हुआ। श्री ए0के0दास के कार्यकाल में भी सन 1970 ई0 में से 1974 ई0 तक प्रदर्शनी मैदान में काफी निर्माण कार्य हुए, इस द्वार का निर्माण सन् 1971 में भारत पाक युद्व में वीरगति प्राप्त वीरचक्र विजेता हवलदार हरवीर सिंह निवासी रिझोड़ा की पुण्य–स्मृति में हुआ। अधिकारीगण के केम्पों में जाने वाले रास्ते पर पश्चिम जानिव स्थिति द्वारा जिसका उद्घाटन श्री ए0के0दास द्वारा 27.02.1973 को हुआ तथा जिस पर जनपद के उन 11 वीर जवानों के नाम अंकित हैं जिन्होंने देश की रक्षा के

लिये सराहनीय कार्य करके जनपद का नाम रोशन किया, यह द्वारा भी देखने योग्य है। इस द्वार पर निम्न वीर जवानों के नाम अंकित हैं–

1. हवलदार दयाराम 2 नायक लखपतराम 3. ले0कर्नल एन0एन0रावत 4. मेजर एस0सी0शर्मा 5. मेजर रनवीर सिंह 6. नायब सूबेदार रामलला सिंह 7.दफेदार हरवीर सिंह 8. हवलदार ज्ञानचन्द्र 9. ले0 कर्नल पी0एन0 कक्कड़ 10. नायक आदर्श कुमार अरोरा 10. केप्टन जसराम सिंह

संजय गांधी द्वार भी प्रदर्शनी के सुन्दर द्वारों में से एक है जिसका निर्माण तत्कालीन जिलाधिकारी डी0एन0 मिश्र के कार्यकाल में सन् 1976 में हुआ। सन् 1980 ई0 में निर्मित बुलन्द द्वार जिसका निर्माण श्री पी0एल0 पूनिया के कार्यकाल में सन् 1980 ई0 में हुआ भी देखने योग्य है। प्रदर्शनी की शताब्दी के अवसर पर शताब्दी स्तम्भ का शिलान्यास दिनांक 10.02.1981 को तत्कालीन जिलाधिकारी श्री बलजीत सिंह लाली द्वारा सम्पन्न हुआ। इस शताब्दी स्तम्भ के निर्माण कार्य के लिए तत्कालीन परगनाधिकारी एवं प्रमुख मंत्री जिला प्रदर्शनी श्री रामचरन जाटव व उप संयोजक एवं मंत्री जिला प्रदर्शनी श्री प्रेमशंकर गर्ग, एडवोकेट बनाये गये। लेकिन पैसे के अभाव में यह कार्य पूरा न हो सका।

अंग्रेजों के शासनकाल में प्रदर्शनी में होने वाले समस्त सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजन शामियानों में होता था। वर्षा आदि के हो जाने के कारण इन कार्यक्रमों मे बाधा पड़ती थी। इसलिए तत्कालीन कलेक्टर मिस्टर डी0एस0 बैरन ने सन् 1936 ई0 में बैरन हाल का निर्माण कराया, उस जमाने में तो इन कार्यक्रमों के केवल गिने चुने प्रमुख अधिकारीगण, रईस, जमीदार, नवाब आदि ही सम्मिलित होते थे और उनकी सीमित संख्या देखते हुए बैरन हॉल में जगह की कमी नहीं पड़ती थी। प्रदर्शनी कार्यालय भी इसी भवन में हुआ करता था और अब आज भी यहीं पर स्थिति है, बैरन हॉल के चारों तरफ की फुलवाड़ी देखने से सम्बन्ध रखती है तथा प्रदेश में अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्व है। इसमें माली पूरन सिंह की सेवायें उल्लेखनीय रही है। अब उनके पुत्र श्री रसवीर सिंह प्रदर्शनी स्थित फुलवारियों की देखभाल मेहनत के साथ कर रहे हैं। स्वर्गीय श्री रघुवीर सरन शर्मा प्रदर्शनी लिपिक की सेवायें भी भुलाई नहीं जा सकती जिन्होंने मरते दम तक 30 साल से अधिक समय कुशलता पूर्वक प्रदर्शनी समिति की सेवा की। जिला प्रदर्शनी के तत्कालीन वरिष्ठ उपाध्यक्ष पंडित छुट्टनलाल द्विवेदी वैद्य की सेवाये भी हमेशा याद की जाती रहेगी। जिला प्रदेर्शनी के उद्घाटन व समापन समारोह में पिछले 45 वर्ष से पहली माला आदर्णीय वैद्य जी द्वारा ही मुख्य अतिथि को पहनाई जाती रही है उनकी सेवाएं भी भुलाई नहीं जा सकती।

सांस्कृतिक कार्यकमों के लिए उचित स्थान का अभाव था जिसकी पूर्ति 1958 ई0 में तत्कालीन जिलाधिकारी श्री एस0एन0 महरोत्रा के कार्यकाल में मेहरोत्रा प्रदर्शनी आडीटोरियम का निर्माण करके इस अभाव को दूर किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में श्रोताओं की रूचि तथा भारी भीड़ के कारण यह आडीटोरियम भी छोटा पड़ता था इस कारण इसका दो बार पुनर्निर्माण करके इसको बड़ा किया गया। यह कार्य श्री ए0के0 दास के कार्यकाल में दिनांक 16.2.72 को तथा दूसरी बार श्री डी0एन. मिश्रा के कार्यालय में सन 1976 में पूरा किया गया। आज यह प्रदर्शनी पन्डाल पश्चिमी उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा आडीटोरियम माना जाता है। जिसमें करीब 5 हजार व्यक्तियों के बैठने का स्थान है।

जमाने की बदलती रफ्तार तथा जरूरतों ने प्रदर्शनी का रूप भी बदला, स्वतन्त्रता के पश्चात धीरे–धीरे रईसो का प्रभाव प्रदर्शनी में कम होता गया और समाज सेवियों तथा सांस्कृतिक औद्योगिक व कृषि सम्बन्धित गतिविधियों में रूचि रखने वालों का प्रभाव बढ़ने लगा। सन् 1955 ई0 में घुड़दौड़ बिल्कुल बन्द हो गयी क्योंकि जिस मैदान में घुड़दौड़ हुआ करती थी उस मैदान को प्रदेश सरकार ने वर्तमान आफिसर्स कालोनी के निर्माण हेतु अधिग्रहण कर लिया और वहाॅ पर आवासों का निर्माण करा दिया गया। अतः यह प्रदर्शनी घुड़दौड़ के स्थान पर कृषिऔद्योगिक एवं सांस्कृतिक प्रदर्शनी के नाम से जानी जाती है।

बुलन्दशहर प्रदर्शनी का अपना एक और विशिष्ट स्वरूप है। यह मेला कृषि और औद्योगिक प्रदर्शनी के लिए एक आदर्श स्थल बन गया जिसमें कम से कम एक लाभ अवश्य हुआ कि बुलन्दशहर के उद्योगों को अपने अपने उत्पादनों का प्रदर्शन करने का अवसर मिला। जिससे प्रदर्शनी में आने वाले लाखों व्यक्तियों को बुलन्दशहर के उद्योगों की जानकारी मिली तथा जनपद के उद्योगों को प्रदेश व देश के अन्य नगरों के बाजारों में पहुॅचने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

कृषि के क्षेत्र में भी बुलन्दशहर जनपद का पूरे प्रदेश में प्रमुख स्थान है। कृषि विभाग द्वारा प्रदर्शनी में एक विशाल कृषि मंडप का आयोजन किया जाता है जहॉ कृषकों के लिए विशेषज्ञों द्वारा कृषि सम्बन्धित उपयोगी चीजें प्रदर्शित की जाती हैं।

जिला प्रदर्शनी में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम उच्च कोटि के होते हैं, जिनमें देश प्रदेश के महान कलाकार, कविगण, शायर, व कब्बाल आदि भाग लेते हैं, व उन्हे देखने–सुनने के लिए आस–पास के ेजनपदों से भारी संख्या में श्रोता आते हैं। इन कार्यक्रमों का आयोजन प्रदर्शनी पन्डाल में होता है जो पश्चिमी उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा आडिटोरियम है।

बुलन्दशहर जनपद ने भारतीय सेना को समय–समय पर काफी सैनिक प्रदान किये हैं जिसकी वजह से बुलन्दशहर जनपद में काफी भूतपूर्व सैनिक हैं। प्रदर्शनी मे ंएक आकर्षक समारोह भूतपूर्व सैनिकों का भी आयोजित होता है। जिससे भारतीय सेना के उच्च अधिकारीगण सम्मिलित होते हैं, और बुलन्दशहर प्रदर्शनी में अधिकारियों के कैम्पों के अतिरिक्त अर्न्तराष्ट्रीय व स्थानीय समाजसेवी संस्थाएं जैसे रोटरी क्लब, लायन्स क्लब, ममफोर्ड क्लब, आनेस्ट क्लब आदि भी अपने कैम्प लगाते हैं व समाज की सेवा करते हैं। प्रदर्शनी बिजली की शानदार रोशनी तथा पानी के फुब्बारों का शानदार आयोजन देखने योग्य होता है। प्रदर्शनी स्थल पर एक परिवार कल्याण की प्रदर्शनी एवं प्रदर्शनी में आने वाले व्यक्तियों के लिए दवा आदि की व्यवस्था के लिए एक छोटा अस्पताल भी स्थापित किया जाता है। जन स्वास्थ्य रक्षा एवं प्रदर्शनी स्थल एवं प्रदर्शनी स्थल की पूरी सफाई की व्यवस्था नगर पालिका बुलन्दशहर द्वारा की गयी है। जिसकी देखभाल स्वयं चिकित्साधिकारी करते हैं। प्रदर्शनी स्थल पर पोस्ट ऑफिस व बैंकों की स्थापना भी की जाती है।

आज प्रदर्शनी ने अपनी पुरानी गतिविध को बन्द नहीं किया केवल घुड़दौड़ छोड़ देनी पड़ी क्योंकि इसका अब कोई विशेष उपयोग नहीं रह गया था। आज प्रदर्शनी में जिन्दगी के हर पहलू पर प्रकाश डाला जाता है तथा प्रत्येक चीज दूर–दूर से आने वाले दुकानों में उपलब्ध होती है।

छात्रों के लिए वाद–विवाद प्रतियोगिता, अन्ताक्षरी, ड्रामें, कबड्डी व चित्रकला प्रदर्शनी आदि का आयोजन होता है। नन्हे मुन्ने बच्चों के लिए शिशु प्रदर्शनी, महिलाओं द्वारा आयोजित रंगारंग प्रोग्राम, भारत सरकार द्वारा नाटक का प्रदर्शन, रामलीला, शास्त्रीय संगीत, नवरंग संगीत संध्या आदि भी प्रदर्शनी के शानदार कार्यक्रमों में रहते हैं। पुष्प प्रदर्शनी व फल–सब्जियों की प्रदर्शनी, आचार मुरब्बे की प्रदर्शनी, जनपद से सम्बन्धित उद्योगों की प्रदर्शनी, देश प्रदेश व जनपद के प्रसिद्व पहलवानों की कुश्तियॉ, पशु प्रदर्शनी जिसमें अच्छी नसल के बैल, गाय, भैंस, आदि भाग लेते हैं, ग्रामीण जनता के लिए काफी आकर्षण का केन्द्र रहती है। शूटिंग प्रतियोगिता शिकारियों के लिए विशेष रूचि का कार्यक्रम होता है। स्वान प्रदर्शनी भी काफी आकर्षक होती है इसमें दूर–दूर से अच्छी नसलों के कुत्ते भाग लेते हैं।

सूचना विभाग द्वारा प्रदर्शनी में सरकार की नीतियों का फिल्मों द्वारा व्यापक रूप से प्रचार किया जाता है। बचत योजना विभाग द्वारा लगायी जाने वाली प्रदर्शनी भी लाभप्रद होती है।

प्रदर्शनी का सबसे मुख्य आकर्षण प्रदर्शनी का समापन समारोह होता है, जिसे ब्रिटिश काल में दरबार के नाम से पुकारा जाता था। इस अवसर पर मुख्य आकर्षण कलेक्टर की हाथी पर भव्य सवारी होती थी। इस समारोह में अंग्रेज कलेक्टर के दरवारी, जमीदार, नवाब व रईस रंगबिरंगी दरबारी पोशाक पहनकर आते थे। यहां प्रदर्शनी में प्रदर्शित खूब सूरत वस्तुओं व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अच्छा प्रदर्शन करने वालों को कलेक्टर महोदय द्वारा पुरस्कृत किया जाता था तथा रात्री को शानदार आतिशबाजी का आयोजन होता था। अब दरबार के स्थान पर इस समारोह को

,समापन समारोह, कहा जाता है तथा यह समारोह बड़ी सादगी के साथ होता है तथा आम जनता भी इसमें भाग लेती है।

दुर्भाग्य से सन् 1982 के बाद कुछ अवांछनीय घटनाओं ने प्रदर्शनी की कार्य समिति की छवि को धूमिल कर दिया। कार्यक्रमों के स्तर और आकर्षण में भी ह्रास हुआ। राजनैतिक हस्तक्षेप भी कहीं–कहीं दृष्टि गोचर होता रहा है। अतः प्रदर्शनी के उज्जवल स्वरूप को पुनः स्थापित करने तथा कार्यक्रमों की विविधता बनाये रखने की आवश्यकता है। यह प्रसन्नता की बात है कि कुछ वर्षो से अन्तरविश्वविद्यालय प्रतियोगिता और छात्र छात्राओं के सांस्कृतिक कार्यक्रमों को अधिक प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

अराजक घटनाओं के कारण 1947 व 48 में प्रदर्शनी न हो सकी तथा 1969 ई0 में साम्प्रदायिक तनाव के कारण प्रदर्शनी आयोजित नहीं हुई। मेरे नजदीक बुलन्दशहर नुमाइश ना तो नुमाईश है और न प्रदर्शनी ही। ये तो एक त्योहार है सालाना जिसे जिले का हर तवका मनाता है और बड़ी खुशी से। महीनों पहले से इसकी तैयारी होती है और अगले साल तक जिसकी चर्चा। मगर आप जो कहना चाहे राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है। आप प्रदर्शनी कह लें।

आपको यह प्रदर्शनी मुबारक हो

और

हमको वह पुरानी यादें, जिन्हें हम वर्षो से संजोये और संवारे बैठे हैं और हमको मुबारक, प्यार भरी यादें जिन्दगी की शाम में दुलारती हैं।